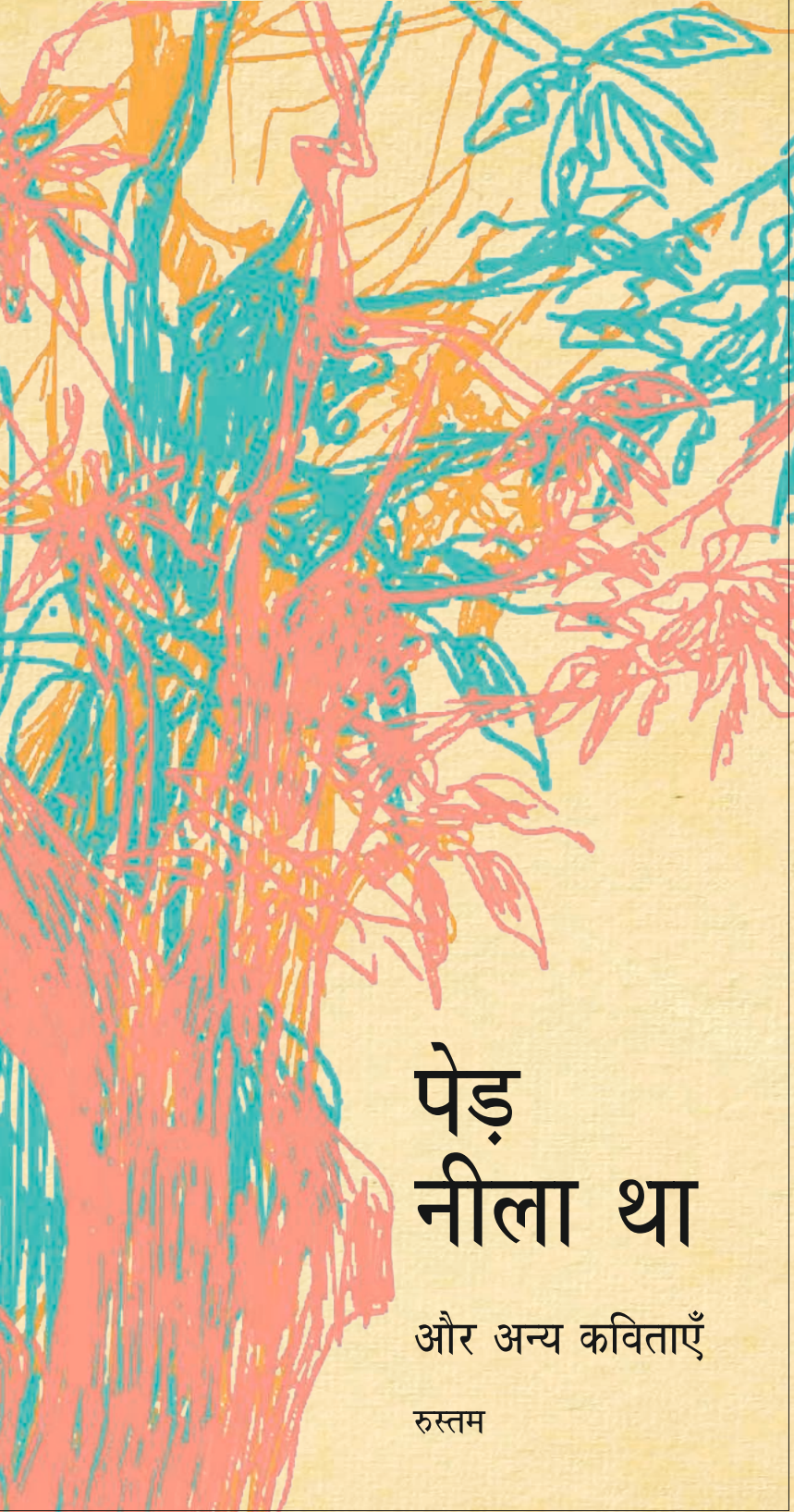

पेड़ नीला था

और अन्य कविताएँ

रुस्तम

पेड़ नीला था

और अन्य कविताएँ

रुस्तम

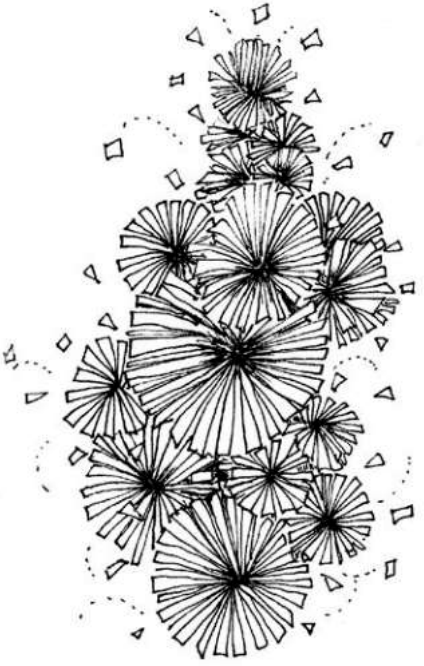

एकलव्य

1 जो स्वप्न मुझे नहीं आते थे

2 कई चीज़ें हैं

3 चट्टान

4 दिन लाल था या हरा

5 सिर्फ एक पत्ते पर

6 पूरी पृथ्वी में

7 नीम के पत्ते

8 बरस रहा था चाँद भी

9 पानी में से

10 पेड़ नीला था

11 किसी दिन मैं पर्वत की आवाज़ को सुनता हूँ

12 समय कुछ ढूँढता था

किसे याद करता था समय?

पेड़ नीला था की कविताएँ कई वजह से मुझे बेहद प्रिय हैं। पहली वजह है उनकी सादगी। वे लगभग चुपचाप अपनी बात कहती हैं। किसी किस्म का शोर, आवेश, उतार-चढ़ाव, भाषाई उठा-पटक, भाषाई तिकड़म...कुछ नहीं है। कहीं-कहीं लगता है कि उनमें भाषा है ही नहीं। सिर्फ बात है। आप कह सकते हैं कि बात है तो भाषा कैसे बाहर हो सकती है? तो कहूँगा कि उनमें भाषा और बात एक नाप की है।

सिर्फ एक पत्ते पर

रोशनी गिर रही थी।

सिर्फ एक पत्ता हरा था।

सिर्फ एक पत्ता हिल रहा था।

हौले-हौले हिल रहा था।

पृथ्वी शान्त थी।

पूरी पृथ्वी शान्त थी।

सिर्फ एक पत्ता हिल रहा था।

इस कविता में एक सांगीतिकता है। पहले यह कविता और इसकी भाषा एक बहुत ही शान्त माहौल रचती है।

फिर अपनी बात कहती है।

सिर्फ एक पत्ते पर रोशनी गिर रही थी। एक साथ नहीं कहती है।

पहले कहती है – सिर्फ एक पत्ते पर।

रोशनी गिर रही थी। ज़्यादा महत्वपूर्ण चीज़ रोशनी नहीं है। वह तो बाद की बात है। ज़रूरी बात है कि सिर्फ एक पत्ते पर गिर रही थी। सिर्फ एक पत्ता हरा था। सिर्फ एक पत्ता हिल रहा था।

पृथ्वी शान्त थी। पूरी पृथ्वी शान्त थी। एक पत्ते की बात इस कविता में चल रही है। एक पत्ते की बात करती यह कविता पृथ्वी पर आ जाती है। कहाँ एक पत्ता और पृथ्वी? इसलिए कविता पृथ्वी की शायद विशालता को, विराट को रचने के लिए दुबारा कहती है – पूरी पृथ्वी शान्त थी। जैसे पृथ्वी शान्त थी कहने से कुछ छूट सकता था। पूरी पृथ्वी शान्त थी। बस एक पत्ता हिल रहा था। क्यों? क्योंकि सिर्फ वही हरा था। क्यों? क्योंकि सिर्फ उसी पर रोशनी गिर रही थी। यह कविता पढ़ते हुए कई तरह के मन बनते हैं। एक, जैसे कोई याद आती है। रह-रहकर। कोई चीज़ कचोटती है। रह-रहकर। इस कविता का ढाँचा उस तरह का भी है। रह-रहकर... एक साँस में कोई बात कह दी। झट से। ऐसा नहीं है।

दूसरा, जैसे बस कुछ को ही रोशनी हासिल है। और पृथ्वी शान्त है। पूरी पृथ्वी शान्त है। तो पूरी पृथ्वी का शान्त होना एक सवाल बन जाता है। कि पूरी पृथ्वी क्यों शान्त है?

एक मन कहता है कि शायद यह जिजीविषा की कविता है? कि सिर्फ एक हरी पत्ती भी पृथ्वी को लौटा सकती है। साहस की। कि एक पत्ता भी हरा है तब तक उम्मीद है?

फिर एक मन कहता है कि यह किसी सघन क्षण की याद है। जब शेष कुछ नहीं था। बस वह क्षण था। वह एक पत्ता इस तरह दिख रहा था कि जैसे उसे देखने भर की रोशनी ही बची थी या बाकी थी। पर क्या उस पत्ते की खास स्थिति की वजह से रोशनी सिर्फ उसी पर गिर रही थी? या वह क्षण खास था।

क्या रोशनी ज्ञान और उससे पैदा हुई सत्ता का प्रतीक है? कि वह इस पृथ्वी नाम के दरख्त के एक पत्ते हिस्से को हासिल है? और पूरी पृथ्वी शान्त है? चुप।

कभी यही कविता उस एक पत्ते को समूची पृथ्वी से बाहर लाकर खड़ा कर देती है।

पूरी पृथ्वी शान्त थी। पूरी पृथ्वी में तो वह पत्ता भी शामिल होना चाहिए। पर वह तो हिल रहा है। हरा है। उस पर रोशनी गिर रही है।... कि उस एक पत्ते के बिना भी पृथ्वी पूरी थी। कि यह क्षण पारलौकिक था। पत्ता पृथ्वी से बाहर का लगता था। या कि पूरी पृथ्वी में उस पत्ते की कोई गिनती नहीं थी। उसका होना या न होना बराबर था।

अक्सर हमें जीने की एक आदत बन जाती है। हमारी सुबहें, शामें, रातें, धूप, रोशनी, सूरज, चाँद से लेकर घर और बाहर और सड़क सब आदत बन जाती है। जैसे कि साइकिल चलाने की आदत बन जाती है। हमें ब्रेक लगाने के लिए सोचना नहीं पड़ता। इस संग्रह की कविताएँ हमारे जीवन की आदतों को थोड़ा-सा हिलाने-डुलाने की कविताएँ हैं। ये कविताएँ कहती हैं कि एक पत्ते को देखो। एक ही पेड़ के सारे पत्ते एक से नहीं होते। उन्हें हमारा अगले ही क्षण देखना भी एक-सा नहीं होता। आज की धूप को देखो। आज की सड़क को देखो। वह रोज़ अलग है। उसके किनारे कितनी चीज़ें हैं। हवा के बारे में सोचो। एक कवि ने कहा है – साँस लेना भी कैसी आदत है! आदतन नहीं इरादतन चीज़ों को देखो। समीप देखो तो एक पत्ते को ऐसे देखो कि समूची पृथ्वी को अलग रख दो। और दूर देखो और विस्तार देखो तो इस तरह कि चट्टानों के रंग बदलने को। दुनिया को तब से देखो जब वह आग थी। जो दिख रहा है और जो है का तिलिस्म। जो दिख रहा है वह है या जो है वह दिख रहा है...

कि आग जैसी बहुत-सी चट्टानों के बीच

चट्टानों जैसी आग जल रही थी।

चट्टान और आग। एक बेहद हल्की। एक बेहद सख्त। समय और स्थिति में से अगर समय को घटा दें तो दो एकदम विपरीत दिखतीं ये स्थितियाँ एक ही हैं – आग और चट्टान ।

और समय?

समय कुछ ढूँढता था, टटोलता था...

मैं दूर से उसका पीछा करता था...

कितनी दूर से?

जब आग चट्टान में बदलने वाली थी। हम जहाँ से जीवन को जानते हैं। असल में हम जितना अपनी पृथ्वी, अपने अन्तरिक्ष, अपनी दुनिया को जानते जाएँगे हम अपने समय का विस्तार करते जाएँगे।

...आशा है ये कविताएँ तुम्हें भी आनन्दित करेंगी...

- सुशील शुक्ल

जो स्वप्न मुझे नहीं आते थे

जो स्वप्न
मुझे
नहीं आते थे,
वे
कहाँ जाते थे?
ज़रूर
कोई और
उन्हें देखता था
अपनी नींद में।
रोज़
वह
चुरा लेता था
मेरे कुछ स्वप्न!

कई चीज़ें हैं

कई चीज़ें हैं मेरे आसपास।
और शायद यह अच्छा है।
नज़र उठाता हूँ तो इनमें से कुछ मुझे दिखती हैं।
हाथ बढ़ाता हूँ तो इनमें से कुछ मुझे छूती हैं।
कुछ स्थिर हैं, कुछ हिलती-चलती हैं।
कुछ खड़ी रहती हैं, कुछ मेरी ओर बढ़ती हैं।
कुछ मुझसे डरती हैं।
कुछ से मैं भी डरता हूँ।
और शायद यह अच्छा है।
डरना भी जीवन का हिस्सा है।
इनमें से कुछ में संकोच भी है।
कुछ शर्माती हैं, या फिर हँसती हैं।
कुछ सरेआम हो-हो करती हैं।
ज़रूर इनमें कुछ चुपचाप रोती होंगी।
आँसू मनुष्य की बपौती नहीं हैं।
और शायद यह अच्छा है।

चट्टान

चट्टान
आग में बदल रही थी
जो पहले से ही आग थी
और चट्टान लग रही थी
कई दूसरी चट्टानों के बीच
जो पहले से ही आग थीं और
चट्टानें लग रही थीं – इस तरह
कि आग जैसी बहुत-सी चट्टानों के बीच
बहुत सारी जगहों पर
चट्टानों जैसी
आग जल रही थी।

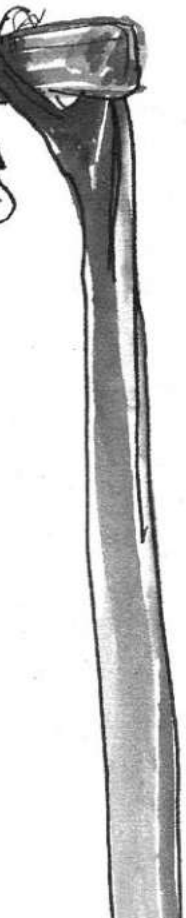

दिन लाल था या हरा

दिन लाल था या हरा
कहना मुश्किल था।
मैं एक लाल-लाल
रास्ते पर
चल रहा था।
उसी पर
एक हरा पत्ता पड़ा था
जिसकी शिराएँ लाल थीं।

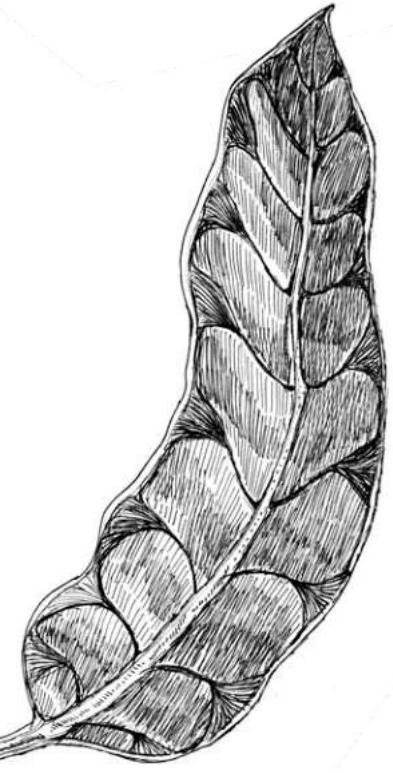

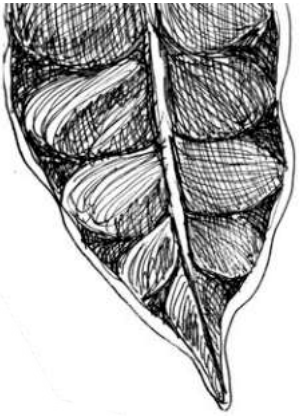

सिर्फ एक पत्ते पर

सिर्फ एक पत्ते पर
रोशनी गिर रही थी।
सिर्फ एक पत्ता हरा था।
सिर्फ एक पत्ता हिल रहा था,
हौले-हौले हिल रहा था।
पृथ्वी शान्त थी।
पूरी पृथ्वी शान्त थी।
सिर्फ एक पत्ता हिल रहा था।

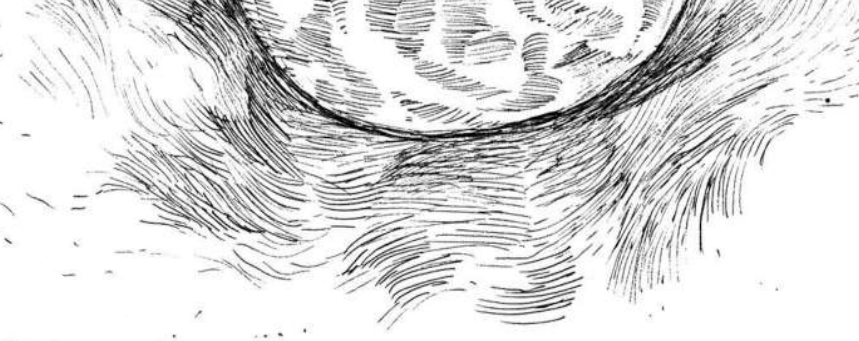

पूरी पृथ्वी में

पूरी पृथ्वी में
पूरा आकाश भी था।
पूरे आकाश में
सिर्फ एक चाँद था।
पर चाँद
कटा हुआ,
अधूरा था
और उसकी रोशनी
आधे चाँद जैसी फैली थी।

नीम के पत्ते

नीम के पत्ते मेरे ऊपर बरस रहे थे।
हवा चल रही थी।
रात में
चाँद निकलने वाला था।
मैं नीम के नीचे बैठा था।
हरे और पीले
नीम के पत्ते मेरे ऊपर बरस रहे थे।

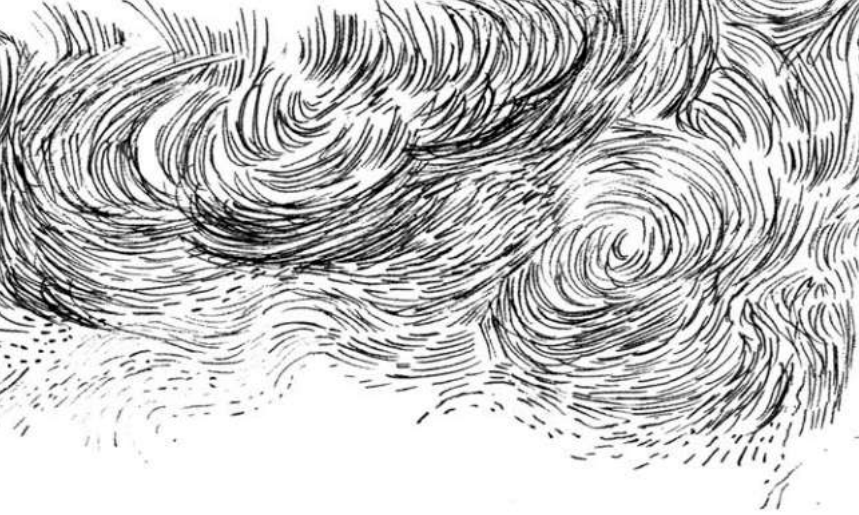

बरस रहा था चाँद भी

बरस रहा था चाँद भी।
चाँद बादल था।
उसकी किरणें बारिश की बूँदें।

बरस रहा था चाँद भी।
उसकी बूँदों में
नहाया हुआ
मैं खड़ा था।

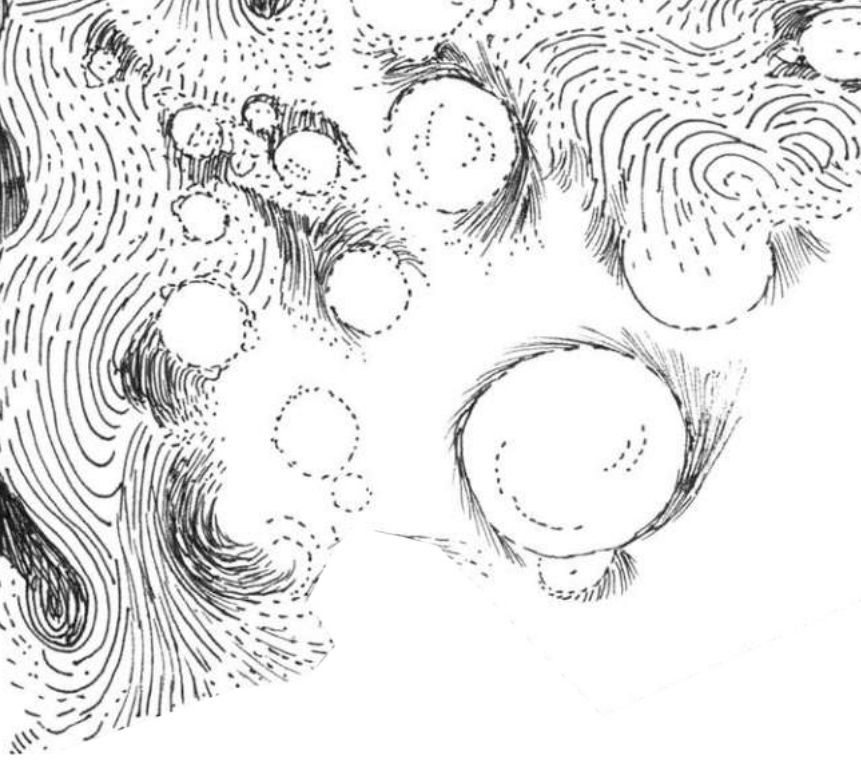

पानी में से

पानी में से
मछली उछलती थी
और वहीं अटक जाती थी।

वहीं अटक जाती थी
बगुले की निगाह भी।

उन्हें देखते हुए
मैं भी अटक जाता था।

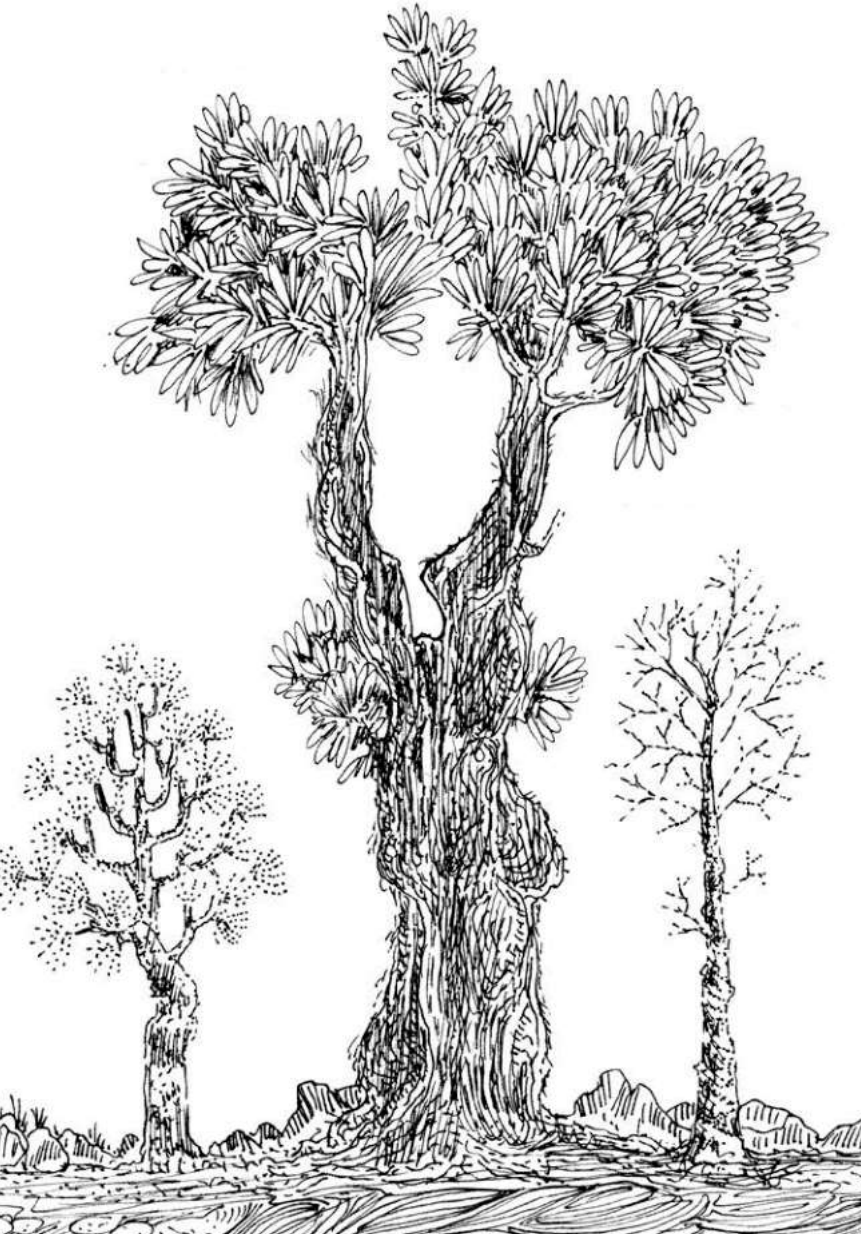

पेड़ नीला था

पेड़
नीला था।
फिर हरा।
फिर काला।

मेरे
देखते ही देखते

वह
रंग पर रंग

बदलता जाता था।

किसी दिन मैं पर्वत की आवाज़ को सुनता हूँ

किसी दिन मैं पर्वत की आवाज़ को सुनता हूँ। वह बहुत गहरे कहीं से आती है। पर्वत धीमे स्वर में बोलता है। जैसे दूर कोई बादल गरज रहा हो या किसी शेर की आवाज़ को दबाया जा रहा हो। जब वह बोलता है तो क्या कहता है पर्वत? कहना मुश्किल है। उसकी भाषा हमसे अलग है, या हम उसे भूल गए हैं। पर वह बोलता ज़रूर है। बोलता है पर्वत। बीच-बीच में वह करवट बदलता है, डोलता है। और हम डर जाते हैं। फिर वह आँख मूँदता है, कुछ सोचता है, किसी स्वप्न में उतर जाता है, पर तब भी बोल रहा होता है।

समय कुछ ढूँढता था

समय कुछ ढूँढता था।
समय कुछ टटोलता था।
रात को, अकेला,
शहर की गलियों में
अपने-आप कुछ बोलता था।
उसकी आँखों में क्या बिम्ब होते थे?
समय क्या सोचता था?
किसे याद करता था समय?
किस अन्य समय को?
और किसे भूलता था?
मैं दूर से उसके पीछे-पीछे घूमता था,
सिर्फ दूर से।

पेड़ नीला था
और अन्य कविताएँ

PED NEELA THA
AUR ANYA KAVITAEIN

कविताएँः रुस्तम
चित्रः कनक शशि

© कविताएँः रुस्तम

चित्रः कनक शशि, नवम्बर 2016
इस कविता के चित्रों का उपरोक्त के समान क्रिएटिव कॉमन्स लाइसेंस के तहत गैर-व्यावसायिक शैक्षिक उद्देश्यों हेतु मुफ्त वितरण के लिए उपयोग किया जा सकता है। ऐसा करते हुए मूल स्रोत के रूप में चित्रकार और प्रकाशक का ज़िक्र करना और उन्हें सूचित करना आवश्यक होगा। अन्य किसी भी प्रकार के उपयोग के लिए एकलव्य से सम्पर्क करें।

संस्करणः नवम्बर 2016 / 3000 प्रतियाँ
पहला पुनर्मुद्रणः नवम्बर 2018 / 2000 प्रतियाँ
दूसरा पुनर्मुद्रणः फरवरी 2020 / 2000 प्रतियाँ
तीसरा पुनर्मुद्रणः नवम्बर 2022 / 3000 प्रतियाँ
कागज़ः 100 gsm नेचुरल शेड एवं 220 gsm पेपर बोर्ड (कवर)
पराग इनिशिएटिव, टाटा ट्रस्ट मुम्बई के वित्तीय सहयोग से विकसित।
ISBN: 978-93-85236-15-0
मूल्यः ₹ 40.00

प्रकाशकः **एकलव्य फाउंडेशन**
जमनालाल बजाज परिसर
फॉर्च्यून कस्तूरी के पास, जाटखेड़ी,
भोपाल - 462 026 (मप्र)
फोनः +91 755 - 297 7770, 71, 72
www.eklavya.in / books@eklavya.in

मुद्रकः आर के सिक्युप्रिंट प्रा लि, भोपाल फोनः +91 755 2687 589

पानी, पेड़, पत्ते, धूप, चट्टान, रंग, मिट्टी, चाँद, नींद, आवाज़, समय, पर्वतों और सपनों की खबर लेती कविताएँ।

तो कहो, तुम्हारे इलाके के पानी, पेड़, पत्ते... और सपने कैसे हैं?

parag
AN INITIATIVE OF TATA TRUSTS

एकलव्य

मूल्यः ₹ 40.00

9 789385 236150